अध्याय–V

शिक्षण व्यूह
(Teaching Strategies)

1) KWL व्यूह
2) मनोरेखा चित्र (Mind Mapping)
3) नृत्याभिनय (Choreography)
4) एकल अभिनय (Mono Action)
5) मूकाभिनय (Mime)
6) सामूहिक कार्य (Group Work)
7) परियोजना कार्य (Project Work)
8) चर्चा (Discussion)
9) स्व - अवगाहन - प्रदर्शन (Self Understanding Expression)
10) Zigsaw विधि
11) Cloze Test विधि
12) साहित्यिक कार्यक्रम (Literature Activities)
13) पुस्तक की समीक्षा (Book Review Read & Reflect doubt)

शिक्षण व्यूह

1) KWL **व्यूह :**

(मुझे क्या पता है? मुझे क्या पता लगाना चाहिए? मैने क्या सीखा?)

किसी एक विषय पर चर्चा करने से पहले छात्रों से पूछना चाहिए कि उन्हें क्या पता है? यह पहला सोपान है। इसके पश्चात वह क्या जानना चाहते है? उन के विचार सुनने चाहिए यह दूसरा सोपान है। पाठ-पठन, संदर्भ ग्रंथों को पढ़ाना, क्रिया कलापों में भाग लेना, सामूहिक कार्यों में भाग लेना तीसरा सोपान है। इस प्रकार - विषय बोध के द्‌वारा चर्चा के उपरांत छात्रों ने क्या सीखा यह पूछना चाहिए।

इस व्यूह में किसी एक अंश को छात्रों से परिचय कराते समय उन्हें इस अंश का पूर्व ज्ञान, रूचि विषय बोध की जानकारी कहाँ तक है इस विषय की जानकारी प्राप्त की जाती है। इसमें बच्चों की कल्पनाशक्ति और पूर्व ज्ञान के आधार पर तथ्यों को जानने का अवसर प्राप्त होता है।

2) **मनोरेखा चित्र (Mind Mapping)**

छात्र अपने आसपास की परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। वह अपने तरीके से उसे अपनी शैली में प्रतिक्रिया दिखाते हैं। Mind Mapping का अर्थ है, बालक किसी एक विषय के बारे में अपने अनुभवों को कक्षा-कक्ष से बाहर प्राप्त ज्ञान को कक्षा में प्रदर्शित करने से उस विषय की जानकारी बांटता है।

इसके लिए उस अंश से संबंधित मूल शब्द को श्यामपट पर लिख कर उस शब्द के भावों पर चर्चा करवायी जाती है।

छात्र स्वयं सोचकर अपने भाव विचार व्यक्त करते हैं। अपनी भावाभिव्यक्ति लिखित रूप में व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता छात्र को मिलती है जिससे छात्र में स्वाभिव्यक्ति करने की क्षमता का विकास होता है।

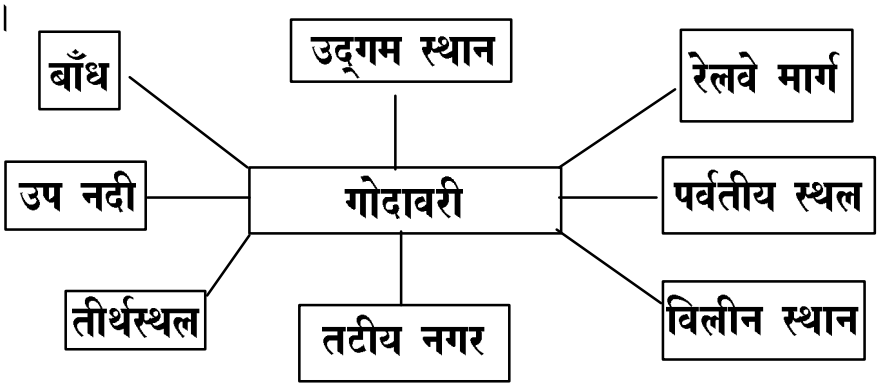

उपरोक्त मनोरेखा चित्र द्‌वारा छात्रों में निबंध, निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता बढ़ेगी।

3) **नृत्याभिनय** (Choreography)

छात्रों द्‌वारा सुनी हुई, पढ़ी हुई घटना/अंश को अभिनय/नृत्य के रूप प्रदर्शित करना ही नृत्याभिनय (Choreography) है। इसमें बच्चों को नृत्यरूपी पाठ्‌यांशों को प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। इसके लिए पाठ्‌यांशों को पढ़कर अभिनय करने वाले पात्रों (छात्रों) का चुनाव करना

चाहिए। प्राकृतिक दृश्य जैसे - वृक्ष, पौधों आदि दर्शाने के लिए भी छात्रों का चुनाव करना चाहिए। छात्रों से अभ्यास करवाकर प्रदर्शन के लिए तैयार करना चाहिए। अभिनय के समय गीत को गाने वाले छात्रों का चुनाव कर उन्हें भी अभ्यास करवाना चाहिए।

जैसे :- हम भारतवासी कविता

जिस देश में गंगा बहती है....

इसके द्‌वारा छात्रों में कविता, गीत, नृत्य आदि की रचना शैली का विकास होता है।

4) **एकल अभिनय :-** (Mono Action)

पाठ्‌यांश या किसी एक अंश में आनेवाले पात्र द्‌वारा किये गये अभिनय को एकल अभिनय, कहते हैं।

जैसे :- स्वराज्य की नींव (एकांकी) X लक्ष्मीबाई, जूही जैसे पात्र

यक्ष-प्रश्न में युधिष्ठिर - IX

इससे पात्र के स्वभाव के बारे में अवगत करवाया जा सकता है।

5) **मूकाभिनय** (Mime) :

मौन रूप से अभिनय के द्‌वारा किसी घटना को जैसे के तैसे प्रेक्षकों के समझने लायक प्रस्तुत करना ही मूकाभिनय है। इसमें संभाषण (Dailogue) नहीं होता है।

जैसे - गुटर गूँ - गुटर गूँ (SAB TV Programme) या चार्ली चापलीन का मूकाभिनय

6) **सामूहिक कार्य (Group work)**

सामूहिक कार्यों से बच्चों में मिलजुलकर काम करना, विचार-विनियम करना, प्रतिवेतन लिखना आदि को प्रोत्साहन मिलता है। इससे, बच्चे आपस में चर्चा करके प्रदर्शन के समय अपने-आप को सक्षम बनाते हैं। सामूहिक कार्य में परियोजना कार्य, प्रस्तुत कार्य, संगोष्ठी, पाठ पठन, शब्द-भंडार आदि समयानुकूल कर सकते हैं। समाचारों का अर्जन कर प्रतिवेदन बनाना आदि इसी के अंग हैं।

7) **परियोजना कार्य** (Project Work)

परियोजना कार्य विविध आकडों के संग्रहण का साधन है। इसे गृहकार्य के रूप में दे सकते हैं। गृहकार्य देते समय इसे व्यक्तिगत व सामूहिक कार्य के रूप में दे सकते हैं। समूह में दिये गये कार्य में प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से निर्देश देना चाहिए। किये गये परियोजना कार्य का प्रस्तुतीकरण व प्रदर्शन कक्षा में करवाना चाहिए। प्रदर्शन या प्रस्तुतीकरण के दौरान उत्पन्न त्रुटियों के लिए आवश्यक सुझाव दें।

8) **चर्चा** (Discussion)

किसी अंश के संबंध में छात्रों के विचार जानना, जानकर चर्चा में भाग लेना।

जैसे :- 1. जल का संरक्षण कैसे करें?

2. पर्यावरण को कैसे संतुलित करें। पर्यावरण का संतुलन कैसे करें?

9) **स्व-अवबोध - प्रदर्शन** (Self understanding-Expression)

किसी एक अंश को छात्र स्वयं पढ़कर उसे समझकर उसे एकल अभिनय, नाटक के रूप में या कठपुतली किसी भी विधा में छात्र स्वयं निर्णय करके उसे प्रदर्शित करेंगे।

जैसे : लक्ष्मीबाई, गाने वाली चिड़िया

10) Zigsaw **विधि**

इस विधि में पाठ को विभाजित कर अनुच्छेदों में बाँटा जाता है। छात्रों को भी दलों में विभाजित कर एक-एक दल को एक एक अनुच्छेद दिया जाता है। सभी छात्र अपने समूह में प्राप्त अनुच्छेद को पहुँचते हैं। फिर एक के पश्चात् एक समूह अपने द्वारा पढ़े गये अंश का विवरण प्रस्तुत करते हैं। इसमें एक दूसरे के द्वारा उठाये गये संदेहों का भी निवारण किया जाता है। समझकर अपने विचार प्रकट करते हैं। आपस में सभी दल मिलकर उत्पन्न समस्याओंया संदेहों का निवारण चर्चा के द्वारा करेंगे।

11) Cloze Test **विधि**

इस व्यूह से पढ़ना-अर्थग्राह्यता कौशलों का विकास होता है। इसमें एक अंश के हर पाँचवें शब्द को रिक्त स्थान के रूप में दिया जाता है। उस अंश को पढ़ व समझकर रिक्त स्थान वाले शब्द की पूर्ति करना होता है।

12) **साहित्यिक कार्यक्रम :-** (Literature Activities)

चार-चार बच्चों को चार दलों में विभाजित कर प्रत्येक दल को भाषाई क्षमताओं का विकास करने के लिए अभ्यास दिया जाता है। ऐसे पढ़े हुए अंश में से एक दल को शब्द-भंडार मुहावरे आदि दूसरे दल को पढ़े हुए अंश से भाषा की महानता के बारे में, तीसरे दल को पढ़े हुए अंश का चित्र बनाना तथा चौथे दल को पढ़े हुए अंश में प्रश्न बनाना या व्याख्या लिखने के लिए निर्देश दिये जाते हैं। अर्थात् एक ही अंश पर सभी समूह साहित्यिक रुप से कार्य करते हैं।

इससे सभी दल के छात्र भाषाई क्षमताओं के विकास का अभ्यास करेंगे इन सभी अंशों को कक्षा में प्रदर्शित कराना चाहिए।

13) **पुस्तक की समीक्षा** (Book Review)

छात्रों में पठन क्षमता विकास करने के लिए पुस्तक पठन का आयोजन किया जाता है। छात्रों को पुस्तकालय की विविध प्रकार की पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए और उन पुस्तकों पर समीक्षा करवानी चाहिए। समीक्षा में -

1) कौनसी पुस्तक पढ़ी?
2) पढ़ी हुई पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त करना।
3) अपने अनुभव बताना।
4) पात्रों व घटनाओं का विवरण देना।
5) कवि ने किस उद्देश्य से उस अंश को लिखा होगा इस विषय पर चर्चा होनी चाहिए।